कथा सरिता

सच्चा राजा

एक राजा अत्यधिक महत्वाकांक्षी था। अपने राज्य का विस्तार करने के लिए वह निरंतर युद्धों में लगा रहता, इसलिए उसने अपने राज्य के बजट में सर्वाधिक वरीयता सेना को दी। अनेक वर्षों तक कई युद्ध करके वह एक विशाल साम्राज्य का अधिपति बन गया। इससे वह अहंकारी हो गया और मानने लगा कि इस विश्व में कोई भी राजा उसका मुकाबला नहीं कर सकता। वह खुद को अपराजेय समझने लगा।

एक बार युद्ध जीतने के बाद लौटते समय मार्ग में उसने पड़ाव डाला। वहीं पास में साधु की कुटिया थी। साधु से सत्संग के उद्देश्य से वह कुटिया में आया। राजा ने देखा कि साधु कुटिया में बैठा बड़ी ही मस्ती और तल्लीनता से भजन गा रहा है। उसकी वह मस्ती देखकर राजा ने साधु से पूछा,'आप कौन हैं?' साधु ने उत्तर दिया, 'राजा !' राजा ने सोचा कि शायद साधु ने प्रश्न ठीक से सुना नहीं। राजा ने पुन: प्रश्न दोहराया। तब भी राजा को वही उत्तर मिला। तब राजा ने पूछा, 'राजा के पास तो राज्य और खज़ाना होता है। आपका राज्य और खज़ाना कहां है?' साधु ने जबाब दिया,'मैंने अपने मन पर विजय प्राप्त कर ली है, जो मेरा राज्य है। जहां तक खज़ाने का प्रश्न है तो यह सम्पूर्ण प्रकृति मेरा खज़ाना है क्योंकि इसका अन्न,पानी और हवा मुझे सदा अकूत मात्रा में उपलब्ध है।' राजा को समझ में आ गया कि राज्यों को जीतना आसान है, किन्तु मन को जीतना बड़ा ही कठिन है। अत: सच्चा राजा मैं नहीं, यह साधु है। उस दिन से राजा ने अहंकार छोड़ युद्ध बंद कर दिए।

कहानी का निहितार्थ यह है कि मन को संयम की डोर से बांधने में सफल व्यक्ति ही सही अर्थों में जितेंद्रिय होता है और जीवन में बड़ी प्रसन्नता और शान्ति हासिल कर पाता है। स्वयं पर शासन करने वाला ही दूसरों के दिलों पर राज्य कर सकता है।

खरा शिष्य

द्रोणाचार्य ने कौरवों और पांडवों को शिक्षा देने के उपरांत, एक दिन परीक्षा लेनी चाही। बोले- 'मुझे गुरुदक्षिणा दो'। कौरव-पांडव तैयार थे। बोले- 'कहिए गुरुजी'।

द्रोणाचार्य ने कहा-'एक पाठ सुनाओ जो मैं तुम्हें देता हूं। पाठ है- 'सत्य बोलना धर्म है और असत्य बोलना अधर्म है। इसे तुम कल सुनाओ।' कई राजकुमार तुरंत पाठ सुनाने को तैयार हो गए। बोले-'अभी सुन लीजिए गुरुजी।'

दूसरे दिन सभी कौरव और पांडव ने पाठ सुना दिया लेकिन धर्मराज युधिष्ठिर ने समय मांगा। धर्मराज छह मास तक समय मांगते रहे और तब उन्होंने कहा-'अब मैं पाठ सुना सकता हूं, गुरुवर,' द्रोणाचार्य की प्रसन्नता की सीमा नहीं थी। उन्होंने धर्मराज की पीठ थपथपाई और बोले-'तू ही एक ऐसा शिष्य है, जिसने विद्या के मर्म को समझा है'।

विद्या को ग्रहण करना ही काफी नहीं है, अपितु उसे जीवन में उतारना आवश्यक है। किताबी ज्ञान तो आसानी से हासिल किया जा सकता है, लेकिन उसे अपने आचरण में लाना ही सच्ची सफलता है।

आइए दुआ करें कि जो ज्ञान हमने पाया है, उसे जीवन में उतारने की कोशिश करें।

भीतर भागें

एक जगह पर ज्ञानी सत्संग कर रहे थे। एकाएक जोरों से आंधी चली, छत हिलने लगी, सभी भक्त एवं श्रोतागण वहां से भाग खड़े हुए तथा एक सुरक्षित स्थान पर जाकर शरण ली। थोड़ी देर बाद आंधी शांत हो गई फिर लोग वापस आये तो गुरूजी को देखकर आश्चर्यचकित रह गए। इतनी भयानक आंधी चलने पर भी गुरूजी अपने स्थान पर ही बैठे रहे वहां से बिल्कुल भी नहीं हिले। भक्तों ने पूछा- गुरूजी इतनी तेज आंधी चली, हम भाग गए परंतु आप वहीं बैठे रहे आपने अपने आप को सुरक्षित करने का प्रयास क्यों नहीं किया? स्वामी जी ने बहुत प्यार से जवाब दिया कि स्वयं को सुरक्षित करने के लिए भागा तो मैं भी परंतु फर्क सिर्फ इतना था कि ''तुम भागे बाहर की और तभी मैं भागा अंदर की ओर।'' उनकी बातें सुनकर सभी को यह अहसास हुआ कि परमात्मा से जुड़कर ही हम स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं।

अंतर्मुखता में ही सुरक्षा है बाह्यमुखता में नहीं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने अंदर की यात्रा आरंभ करें और स्व को जानने का पुरूषार्थ करें।

निर्मल सोच

एक बार युधिष्ठिर और दुर्योधन इस दुनिया को देखने के लिए निकले। सारा जहान घूमकर वापस वे भीष्म पितामह के पास पहुँचे। पितामह ने उनसे पूछा, वत्स! तुमने दुनिया में क्या-क्या देखा ? दुर्योधन ने जवाब दिया, क्या बताऊँ दुनिया में सारे बुरे ही बुरे लोग समाए हुए हैं। मुझे एक भी अच्छा आदमी नजर नहीं आया। युधिष्ठिर से पूछा गया तो उसने बताया, 'पितामह! दुनिया में अच्छे लोगों की कमी नहीं है। मुझे एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला जिसमें कोई न कोई अच्छाई न हो।

' अच्छी नजरों से , अच्छे मन से अगर संसार को देखा जाए तो संसार में भी स्वर्ग नजर आएगा। अच्छे विचार व श्रेष्ठ विचार के चिंतन से सोच के नजारे बदलेंगे वहाँ ही आपकी शांति, प्रेम खुशी बिखेरेगी। सिर्फ अपने अस्तित्व की पूर्णरुपेण समझ व उस समझ को व्यवहारिक बनाना ही विजय पाना है। हमने जब भी औरों को कष्ट दिया है, वह कष्ट लौटकर हमें भी दु:खी कर गया और जब हमने औरों को आनन्द दिया तो वह आनन्द लौटकर हमें सौ गुणा आनन्दित कर गया। तब जीवन में यह निष्कर्ष उपलब्ध कर ही लिया कि आनन्द किसी और के कारण नहीं मिलता है, बल्कि यह तो स्वयं अपने ही कारण मिलता है, अपने ही निर्मल विचारों और निर्मल सोच के कारण आत्मसात होता है।

मैं अपना मित्र हूँ, सबका मित्र हूँ। सबके प्रति मैत्री का भाव रखता हूँ, इस कारण मैं विश्व मित्र हूँ। मुझ आत्मा की चेतना में सदा मैत्री का माधुर्य रहता है और इसी में मैंने स्वधर्म (आत्मा) को देखा, जाना पहचाना है। जब आदमी अपना मित्र हो सकता है तो फिर शत्रुता का विष क्यों पियें ? जब हम प्रेम पूर्ण जीवन जी सकते हैं तो किसी की उपेक्षा क्यों करे ? जब हम औरों को सुख पहुँचा सकते हैं तो औरो के लिए दु:ख के निमित्त क्यों बनें ?

व्यक्ति अपने चित्त पर आत्म विजय प्राप्त करे, अपने चित्त की धारा को मोड़े और उसे अच्छी राहों पर ले जाने के लिए प्रगतिशील हो ,ताकि हमारा चित्त हमारे लिए वरदान बन सके। आखिर कान वैसा ही सुनेंगे, जैसा मन सुनवाना चाहेगा, आँखे वैसा ही देखेंगी जैसा कि मन दिखलाना चाहेगा। बुरे मन से चीजों को देखेंगे तो आँखे बुरी चीजों को देखेगी, वहीं अगर अच्छे मन से देखेंगे तो आँखे अच्छी चीज ही देखेगी। माना आपके सामने एक बुरा निमित्त आया, पर आपने अच्छी आँखों से उसे देखा तो आप पर वह बुराई हावी नहीं हो पाएगी।

शांतिवन। दादी रतनमोहिनी डाक्टरेक्ट डिग्री अवार्ड प्राप्त ब्र.कु. डॉ.सुरेश्वर मेहेर, मोहम्मदपुर, दिल्ली को डिग्री सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए।

पोरबंदर। शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा अभियान का शुभारंभ करते हुए कलेक्टर एम.ए.गांधी, ब्र.कु.दमयंती, ब्र.कु.चन्द्रिका व ब्र.कु.गीता।

पटना। यात्रा का शुभारंभ करते हुए उच्च न्यायालय के पूर्व जज राजेन्द्र प्रसाद, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.रानी तथा अन्य।

बड़ोदरा। यात्रा का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.नरेन्द्र, ब्र.कु.रोहित, ब्र.कु.निरंजना, उप महापौर सीमा मोहिले, ब्र.कु.संगीता व ब्र.कु.प्रीति।

डिब्रुगढ़। एनएसयूआई के युवा सदस्य, शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा प्रभारी ब्र.कु.रेणु, ब्र.कु.विनिता, ब्र.कु.जितामनि का स्वागत करते हुए।

पुणे। यात्रा का उद्घाटन करते हुए बापुसाहेब भोसले, महापौर वैशाली बंकर, विजय मोरे, ब्र.कु.पारू, ब्र.कु.सोमप्रभा तथा अन्य।

बैंगलोर। शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा अभियान में भाग लेने वाले भाई-बहनें

कोरबा। युवा साइकिल यात्रियों के साथ ब्र.कु.जितेश्वरी, ब्र.कु.रचना तथा अन्य।

नोएडा। फिल्म अभिनेता भरत कुंद्रा, श्रीमती विमला बाथम, पूर्व विधायक नवाब सिंह नागर, एन.पी.सिंह, ब्र.कु.अनुसुइया, ब्र.कु.मंजू, ब्र.कु.शालिनी तथा अन्य अभियान यात्री।